आई सी ए आर - भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

प्रमुख सलाह (16-31 दिसम्बर, 2024)

भारत के सभी क्षेत्रों में गेहूं संबंधित जानकारी

फसल मौसम 2024-25

गेहूं की बुआई अच्छी चल रही है और कुछ उत्तरी राज्यों में अगले 15 दिनों में देर से होने वाली बुआई भी पूरी होने की उम्मीद है। मौसम की वर्तमान स्थिति गेहूं की बुआई के कार्यों के लिए अनुकूल है।

सामान्य सुझाव

- अपने क्षेत्र और परिस्थिति के लिए देर से बुवाई की क्षमता को ध्यान में रखते हुए सबसे उपयुक्त किस्म का चयन करें।
- रोग की संवेदनशीलता के जोखिम से बचने के लिए अन्य क्षेत्रों की किस्में न उगाएं।
- पानी बचाने और लागत में कटौती के लिए खेतों की समय पर और विवेकपूर्ण सिंचाई करें।
- अधिकतम उपज के लिए अपनी फसल को इष्टतम इनपुट (उर्वरक, सिंचाई जल, शाकनाशी और कवकनाशी) के साथ प्रबंधित करें।
- सिंचाई से पहले मौसम पर नजर रखें और यदि बारिश का पूर्वानुमान हो तो सिंचाई से बचें ताकि अधिक पानी की स्थिति से बचा जा सके।
- फसल में पीलापन हो तो नाइट्रोजन (यूरिया) का अधिक प्रयोग न करें। इसके अलावा, कोहरे या बादल की स्थिति में नाइट्रोजन के उपयोग से बचें।
- पीले रतुआ संक्रमण के लिए फसल की नियमित निगरानी करें और नजदीकी संस्थान, एसएयू या केवीके से परामर्श करें।
- फसल अवशेषों को या तो मिट्टी में ही रहने देना चाहिए या मिट्टी में मिला देना चाहिए तथा उन्हें जलाना नहीं चाहिए। मिट्टी की सतह पर फसल अवशेषों की उपस्थिति में, गेहूं की बुवाई के लिए हैप्पी सीडर या स्मार्ट सीडर का उपयोग किया जा सकता है।
- गेहूं की संरक्षण खेती में, सिंचाई से ठीक पहले यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करनी चाहिए।

बुआई का समय, बीज दर और उर्वरक प्रयोग: भारत में गेहूं की फसल विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों और उत्पादन स्थितियों में उगाई जाती है। बुआई के समय में क्षेत्र दर क्षेत्र और अलग-अलग उत्पादन परिस्थितियों में थोड़ा अंतर होता है।

गेहूं की फसल के लिए क्षेत्रवार बुआई बीज दर एवं उर्वरक की मात्रा

क्षेत्र	बुआई की स्थिति	बीज दर	उर्वरक की खुराक और प्रयोग का समय
एनडब्ल्यूपीजेड और एनईपीजेड	सिंचित, देर से बोया गया	125 किग्रा/हैक्टर	120:60:40 किग्रा एनपीके/हे (1/3 एन और पूर्ण पी और के बुआई के समय बेसल के रूप में और शेष एन पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में)
सीजेड और पीजेड	सिंचित, देर से बोया गया	125 किग्रा/हैक्टर	90:60:40 किग्रा एनपीके/हे (1/3 एन और पूर्ण पी और के बुआई के समय बेसल के रूप में और शेष एन पहली और दूसरी सिंचाई में दो बराबर भागों में)

सिंचाई और नाइट्रोजन का प्रयोग

• किसानों को सलाह है कि पहली सिंचाई बुआई के 20-25 दिन बाद करें।

• नाइट्रोजन की खुराक का प्रयोग बुवाई के 40-45 दिन बाद पूरा कर लेना चाहिए। सिंचाई से ठीक पहले यूरिया डालें।

खरपतवार प्रबंधन (शाकनाशी का छिड़काव)

• गेहूं में संकरी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए क्लोडिनाफॉप 15 डब्ल्यूपी @ 160 ग्राम प्रति एकड़ या पिनोक्साडेन 5 ईसी @ 400 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए 2,4-डी ई 500 मिली/एकड़ या मेटसल्फ्यूरॉन 20 डब्ल्यूपी 8 ग्राम प्रति एकड़ या कार्फेंट्राजोन 40 डीएफ 20 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें।

• यदि गेहूं के खेत में संकरी और चौड़ी पत्ती वाले दोनों खरपतवार हैं तो सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 डब्ल्यूजी @ 13.5 ग्राम/एकड़ या सल्फोसल्फ्यूरॉन+मेटसल्फ्यूरॉन 80 डब्ल्यूजी 16 ग्राम/एकड़ को 120-150 लीटर पानी में मिलाकर पहली सिंचाई से पहले या सिंचाई के 10-15 दिन बाद इस्तेमाल करें। वैकल्पिक रूप से, गेहूं में विविध खरपतवार वनस्पतियों के नियंत्रण के लिए मेसोसल्फ्यूरॉन + आयोडोसल्फ्यूरॉन 3.6% डब्ल्यूडीजी @ 160 ग्राम/एकड़ का भी प्रयोग किया जा सकता है।

• बहु खरपतवारनाशी प्रतिरोधी फलारिस माइनर (कनकी/गुल्ली डंडा) के नियंत्रण के लिए, बुवाई के 0-3 दिन बाद 60 ग्राम/एकड़ की दर से पायरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी का छिड़काव करें या क्लोडिनाफॉप + मेट्रिब्यूजिन 12+42% डब्ल्यूपी के तैयार मिश्रण को 200 ग्राम/एकड़ की दर से पहली सिंचाई के 10-15 दिन बाद 120-150 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यदि बुवाई के समय पायरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी का प्रयोग नहीं किया गया हो तो इसे बुवाई के 20 दिन बाद यानी पहली सिंचाई से 1-2 दिन पहले भी प्रयोग किया जा सकता है।

• शीघ्र बोई जाने वाली उच्च उर्वरता वाली गेहूं की फसल के लिए, क्लोरमेक्वेट क्लोराइड 50% एसएल का 0.2% वाणिज्यिक उत्पाद + टेबुकोनाजोल 25.9% ईसी का 0.1% वाणिज्यिक उत्पाद के साथ टैंक मिक्स संयोजन का पहला छिड़काव प्रथम नोड अवस्था (50-55 डीएएस) में 160 लीटर/एकड़ पानी का उपयोग करके किया जा सकता है।

• देर से बोए गए गेहूं के लिए, 17.5 सेमी की पंक्ति दूरी पर 50 किलोग्राम/एकड़ बीज दर का उपयोग करके बुवाई की जानी चाहिए।

• जल्दी बोए गए उच्च उर्वरता की स्थिति वाले गेहूं के लिए, क्लोरमेक्वेट क्लोराइड 50% एसएल के 0.2% वाणिज्यिक उत्पाद + टेबुकोनाज़ोल 25.9% ईसी के 0.1% वाणिज्यिक उत्पाद के टैंक मिश्रण संयोजनों का पहला छिड़काव पहले नोड चरण (50-55 डीएएस) में 160 लीटर/एकड़ पानी का उपयोग करके किया जा सकता है।

पीला रतुआ रोग के लिए सलाह:

पीला रतुआ के विकास और इसके आगे प्रसार के लिए अनुकूल मौसम को ध्यान में रखते हुए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पीला रतुआ के प्रकोप को देखने के लिए नियमित रूप से अपनी फसल का दौरा करें। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पीला रतुआ रोग के लक्षणों की पुष्टि के लिए गेहूं वैज्ञानिकों/विशेषज्ञों/विस्तार कार्यकर्ताओं को सूचित करें या उनसे परामर्श करें क्योंकि कभी-कभी पत्तियों का पीलापन रोग के अलावा अन्य कारकों के कारण भी हो सकता है। यदि किसान अपने गेहूं के खेतों में पीले रतुआ को देखते हैं, तो निम्नलिखित उपाय सुझाए जाते हैं:

• पीला रतुआ के प्रसार को रोकने के लिए संक्रमण के केंद्र पर प्रोपिकोनाज़ोल 25EC @ 0.1 प्रतिशत या टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25% WG @ 0.06% का एक छिड़काव किया जाना चाहिए।

• किसानों को फसल पर तब छिड़काव करना चाहिए जब मौसम साफ हो यानी बारिश न हो, कोहरा/ओस आदि न हो। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे दोपहर में छिड़काव करें।

दीमक नियंत्रण: दीमक प्रभावित क्षेत्रों में, उनके प्रबंधन के लिए क्लोरोपाइरीफॉस@0.9 ग्राम ए.आई./किलो बीज (4.5 मिली उत्पाद डोज/किग्रा बीज) से बीज उपचार किया जाना चाहिए। थायमेथोक्साम 70 डब्ल्यूएस (क्रूजर 70 डब्ल्यूएस) @ 0.7 ग्राम ए.आई./किलो बीज (4.5 मिली उत्पाद डोज /किग्रा बीज) या फिप्रोनिल (रीजेंट 5 एफएस @ 0.3 ग्राम ए.आई./किग्रा बीज या 4.5 मिली उत्पाद डोज /किलो बीज) से बीज उपचार भी बहुत प्रभावी है।

गुलाबी तना छेदक नियंत्रण: गुलाबी तना छेदक कीट का प्रकोप चावल-गेहूं फसल प्रणाली के उन खेतों में अधिक देखा जाता है जहां गेहूं शून्य जुताई वाले खेतों में बोया जाता है। प्रभावित पौधे पीले पड़ जाते हैं और उन्हें आसानी से उखाड़ा जा सकता है। जब पौधे उखाड़े जाते हैं, तो उनकी निचली नसों पर गुलाबी रंग के कैटरपिलर देखे जा सकते हैं। इसके प्रबंधन के लिए, गुलाबी तना छेदक दिखाई देते ही क्विनालफोस (ईकालक्स) 800 मिली/एकड़ का पत्तियों पर छिड़काव करें। सिंचाई से भी गुलाबी तना छेदक कीट से होने वाले नुकसान को कम करने में भी मदद मिलती है।

बुआई के लिए गेहूं की किस्में: जिन किसानों ने अभी तक बुआई नहीं की है, उन्हें सलाह दी जाती है कि वे बुआई के समय और कृषि-जलवायु स्थिति के आधार पर किस्मों का चयन बहुत सावधानी से करें ताकि अधिकतम उपज प्राप्त कर सकें।

उत्तरी, पूर्वी और मध्य भारत में समय पर, देर से, बहुत देरी से बुआई के लिए गेहूं की किस्में

क़िस्म	**उत्पादन स्थितियाँ**	
देर से बोई जाने वाली किस्में		
पीबीडब्ल्यू 752, पीबीडब्ल्यू 771, डीबीडब्ल्यू 173, जेकेडब्ल्यू 261, एचडी 3059, डब्ल्यूएच 1021	सिंचित, देर से बोया गया (25 दिसंबर तक)	**एनडब्ल्यूपीजेड:** पंजाब, हरियाणा, राजस्थान का कुछ भाग, पश्चिम यूपी
डीबीडब्ल्यू 316, पीबीडब्ल्यू 833, डीबीडब्ल्यू 107, एचडी 3118, जेकेडब्ल्यू 261, पीबीडब्ल्यू 752		**एनईपीजेड:** पूर्वी यूपी, बिहार, बंगाल, झारखंड
एचडी 3407, एचआई 1634, सीजी 1029, एमपी 3336		**सीजेड:** एमपी, गुजरात, राजस्थान
बहुत देर से बोई जाने वाली किस्में		
एचडी 3271, एचआई 1621, डब्ल्यूआर 544	सिंचाई बहुत देर से बुवाई (25 दिसंबर से आगे)	सभी जोन

(रतन तिवारी) 16/12/24
निदेशक